11 जो बीत गई सो बात गई

हरिवंशराय बच्चन

(जन्म : सन् 1907, मृत्यु : सन् 2003 ई.)

हालावादी कवि हरिवंशराय बच्चन का जन्म उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इलाहाबाद में ही वे अध्यापक के रूप में नियुक्त हुए। तब उनकी ज़ख्याति भारत भर में फैल चुकी थी। उन्होंने आकाशवाणी में हिन्दी प्रोड्यूसर के रूप में कार्य किया। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के विशेषाधिकारी पद को भी उन्होंने शोभान्वित किया। बच्चनजी ने अभ्युदय पत्रिका के सम्पादक के रूप में भी कार्य किया।

हिन्दी साहित्य में हालावाद के प्रवर्तन का श्रेय बच्चनजी को जाता है। हरिवंशराय जीवन के राग-विरागी, मस्ती और विषाद के कवि हैं। उन्होंने विश्व साहित्य के कुछ अमर ग्रंथों के प्रामाणिक अनुवाद का कार्य भी किया है। उनके प्रमुख काव्यसंग्रहों में 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशानिमंत्रण', एकांत संगीत 'आकुल अन्तर', मिलन यामिनी और 'सतरंगिणी' प्रमुख हैं।

प्रस्तुत कविता 'सतरंगिणी' नामक कविता संग्रह से ली गई है। इस क्विता में कवि ने जो बीत गया उसके पीछे व्यर्थ में शोक न करने की बात को महत्त्व दिया है।

जो बीत गई सो बात गई!
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया,
अम्बर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यारे छूटे,
जो छूट गए फिर कहाँ मिले,
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है!
जो बीत गई सो बात गई!

(2)

जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया,
मधुवन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ,
मुर्झाईं कितनी बल्लरियाँ,
जो मुर्झाईं फिर कहाँ खिलीं,
पर बोलो सूखे फूलों पर;
कब मधुवन शोर मचाता है!
जो बीत गई सो बात गई!

(3)

जीवन में मधु का प्याला था,
तुमने तन-मन दे डाला था,
वह टूट गया तो टूट गया;
मदिरालय का आँगन देखो,
कितने प्याले हिल जाते हैं,
गिर मिट्टी में मिल जाते हैं,

जो गिरते हैं, कब उठते हैं,
पर बोलो टूटे प्यालों पर
कब मदिरालय पछताता है!
जो बीत गई सो बात गई!

(4)

मृदु मिट्टी के हैं बने हुए,
मधुघट फूटा ही करते हैं,
लघु जीवन लेकर आए हैं,
प्याले टूटा ही करते हैं,
फिर भी मदिरालय के अंदर
मधु के घट हैं, मधुप्याले हैं,
जो मादकता के मारे हैं,
वे मधु लूटा ही करते हैं;
वह कच्चा पीनेवाला है
जिसकी ममता घट-प्यालों पर,
जो सच्चे मधु से जला हुआ
कब रोता है, चिल्लाता है!
जो बीत गई सो बात गई!

शब्दार्थ और टिप्पणी

मदिरालय शराबखाना **बेहद** अत्यधिक, बेहिसाब, **अंबर** आकाश, आसमान, **निछावर (होना)** किसी के लिए खुद को मिटा देना, किसी को बहुत अधिक चाहना, **बल्लरियाँ** लताएँ, **मधु** अमृत, मदिरा, शराब **मदु** कोमल, यहाँ कमजोर **मधुघट** शराब से भरी मटकी, **लधु** थोड़ा **मादकता** मतवालापन, मस्ती, **कच्चा** अनाड़ी

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर पंक्ति पूर्ण कीजिए :

(1) जीवन में एक सितारा था, ...।
- (अ) वह डूब गया तो डूब गया
- (क) अम्बर के आनन को देखो
- (ग) माना वह बेहद प्यारा था
- (घ) कितने इसके प्यारे छूटे

(2) जीवन में मधु का प्याला था, ...।
- (अ) तुमने तन मन दे डाला था
- (क) कितने प्याले हिल जाते हैं
- (ग) जो गिरते हैं कब उठते हैं
- (घ) कब मदिरालय पछताता है

(3) लघु जीवन लेकर आये हैं, ...।
- (अ) वह टूट गया तो टूट गया
- (क) प्याले टूटा ही करते हैं
- (ग) वह कच्चा पीनेवाला है
- (घ) कब रोता है चिल्लाता है

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) तारों के टूटने पर अम्बर क्या नहीं करता?

(2) कलियाँ और वल्लरियाँ किसका हिस्सा हैं?

(3) मधुघट किसका प्रतीक है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) सितारे के रूपक से कवि क्या समझाना चाहता है?

(2) मुर्झाई कली पर मधुवन की क्या प्रतिक्रिया होगी?

(3) कवि सच्चे 'मधु से जला हुआ'का प्रयोग किसके लिए करता हैं?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः पंक्तियों में लिखिए :

(1) कवि कुसुम के प्रतीक द्वारा क्या संदेश देना चाहता है?

(2) मधुघट और मनुष्य जीवन में क्या समानता पायी जाती है? स्पष्ट करें।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः प्रस्तुत कविता को कण्ठस्थ कर प्रार्थना सभा में इसका गान कीजिए।

(2) शिक्षण प्रवृत्तिः

- हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा के चार खंडों में से प्रस्तुत कविता की पृष्ठभूमि की चर्चा करें।
- जीवन की क्षणभंगुरता संबंधी कबीर के दोहों की तुलना प्रस्तुत कविता से करें।

⊙